अनुवाद

तू जो अहंकारवश समझता है कि मेरी आज्ञा की अवहेलना करके युद्ध नहीं करेगा, तो यह जान ले कि तेरा यह निश्चय मिथ्या है; स्वभाव तुझे बलपूर्वक युद्ध में लगा देगा।।५९।।

तात्पर्य

अर्जुन एक वीरपुरुष और जन्मजात क्षत्रिय-स्वभाव वाला था। अतः युद्ध करना उसका स्वाभाविक कर्म हुआ। परन्तु मिथ्या अहंकारवश उसे इस विचार से भय हो रहा था कि आचार्य, पितामह आदि गुरुजनों और बन्धुओं की हत्या से पाप होगा। वास्तव में वह स्वयं को अपने कर्मों का स्वामी समझ रहा था, मानो वही कर्म के शुभ-अशुभ फल का विधान करता हो। वह भूल गया कि वहाँ विराजमान श्रीभगवान् स्वयं उसे युद्ध करने की आज्ञा दे रहे हैं। यही जीव की विस्मृति है। श्रीभगवान् निर्देश करते रहते हैं कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है। इसके अनुसार मनुष्य को तो बस कृष्णभावनाभावित कर्म करते हुए जीवन की कृतार्थता को प्राप्त करना है। जीव के भाग्य को जैसा श्रीभगवान् जानते हैं, वैसा वह स्वयं नहीं जानता। अतएव श्रीभगवान् से निर्देश ग्रहण करके उसके अनुसार कर्म करना सर्वोत्तम मार्ग है। श्रीभगवान् अथवा उनके प्रतिनिधि—सद्गुरु की आज्ञा की अवहेलना कभी न करे। भगवान् की आज्ञा के अनुसरण में निःसंकोच भाव से निरन्तर तत्पर रहना चाहिए। ऐसा करने वाला सम्पूर्ण परिस्थितियों में सुरक्षित रहेगा।

स्वभावजेन कौन्तेय निबद्धः स्वेन कर्मणा।
कर्तुं नेच्छसि यन्मोहात् करिष्यस्यवशोऽपि तत्।।६०।।

स्वभावजेन=स्वाभाविक; **कौन्तेय**=हे अर्जुन; **निबद्धः**=बँधा हुआ; **स्वेन**=अपने; **कर्मणा**=कर्म द्वारा; **कर्तुम्**=करना; **न इच्छसि**=नहीं चाहता; **यत्**=जो; **मोहात्**=मोह से; **करिष्यसि**=करेगा; **अवशः**=अवश होकर; **अपि**=भी; **तत्**=वही।

अनुवाद

हे अर्जुन! मोहवश तू मेरी आज्ञा के अनुसार जिस कर्म को नहीं करना चाहता, उसी को अपने स्वभाव के वश में होकर करेगा।।६०।।

तात्पर्य

जो श्रीभगवान् के निर्देश की अवहेलना करता है, अर्थात् उसके अनुसार कर्म नहीं करता, वह अपने स्वाभाविक गुणों के अनुसार कर्म करने को बाध्य हो जाता है। मनुष्य गुणों के जिस भी मिश्रण में स्थित है, उसी के अनुरूप कर्म करता है। परन्तु जो स्वेच्छा से श्रीभगवान् की आज्ञा के परायण हो जाता है, वह शाश्वत् रूप में गौरवान्वित होता है।

ईश्वरः सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया।।६१।।